हरियाणवी लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्यों की भूमिका

पारूल शर्मा
पी॰एच॰डी॰ (शोद्यार्थी)
संगीत एंव नृत्य विभाग,
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र,

भूमिका :

भारतीय संगीत शास्त्र में संगीत के अन्तर्गत 'गायन' और 'नृत्य' के साथ वाद्यो का वादन भी आता है । जब हम संगीत को परिभाषित करते है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि गीत, वाद्य तथा नृत्य मिलकर ही संगीत बनता है अतः वाद्यों के बना गीत और नृत्य स्वतंत्र होते हुए भी बेज़ान से लगते है इसलिए वाद्यो के महत्व को नकारा नहीं जा सकता । वादन के बिना संगीत अपूर्ण ही रहता है । वादन ही संगीत को स्थिरता और व्यवस्था प्रदान करता है जो संगीत ताल और वाद्य के बिना होता है, वह बिना नाविक वाली नाव की तरह ही अर्थहीन होता है अतः यह स्पष्ट है कि बिना वाद्यो के संगीत नीरस तथा कर्ण प्रिय नहीं लगता । वाद्यो के बिना संगीत अधुरा है । प्रस्तुत आलेख में हम हरियाणवी लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले लोकवाद्यो के बारे में चर्चा करेंगे ।

भरत ने वाद्यों के चार प्रकार बताए है– 1 तत् वाद्य 2 सुषिर वाद्य 3. अवनद्व वाद्य और 4 द्यन वाद्य । वाद्यों के इन चार प्रकार के वर्गीकरण के अनुसार यदि हरियाणवी लोक वाद्यो का वर्गीकरण किया जाए तो अनुचित न होगा लेकिन यदि हम लोक संगीत वाद्यों के इस वर्गीकरण को उद्देश्य की दृष्टि से देखेगे तो इनके दो वर्ग बनते है पहले स्वरोत्पत्ति के लिए बजाए जाने वाले तत् तथा सुषिर वर्ग के वाद्य । दूसरा लय तथा ताल के लिए बजाए जाने वाले अवनद्व तथा घन वाद्य आते है । हरियाणा में वाद्यों को साज कहा जाता है । जैसे–1. तार साज, 2. खाल साज 3. ताल साज 4. फूंक साज ।

1. तार साज – तार साज के अन्तर्गत तत् वाद्य आते है वह लोकवाद्य जो तार वाले होते है उन्हे तार साज़ कहते है ।
2. खाल साज़ – जिन लोकवाद्यो का निर्माण खाल के द्वारा हुआ है उन्हें 'खाल साज' कहा जाता है । शास्त्रीय भाषा में इन्हे अनवद्व वाद्य कहा जाता है ।
3. ताल साज – जो लोकवाद्य टक्कर अथवा ठोकर लगाकर बजाए जाते है उन्हे 'टक्कर साज' कहा जाता है किन्तु हमने शास्त्रों में वर्णित नाम पर इन्हे 'ताल साज' ही कहा है ।इसके अन्तर्गत घन वाद्य आते है ।
4. फूंक साज – हरियाणवी में हवा अथवा वायु को 'फूंक' कहा जाता है मुंह से फूंक मारकर अथवा अन्य किसी साधन से वायु उत्पन्न करके बजाए जाने वाले लोकवाद्यो को फूंक साज कहा जाता है । संगीत–शास्त्र में इन्हे सुषिर वाद्य भी कहा जाता है ।

इन वाद्यों को बजाने वाले को साजिन्दा नाम दिया जाता है । हरियाणा के लोक संगीत में स्वर देने वाले वाद्यों की संख्या बहुत कम है । लोक संगीत का प्राण लय को माना जाता है इसी लय के आधार पर लोकगीतों का निर्माण हुआ है । यही कारण है कि लोकगीत तर्क प्रधान न होकर बुद्धि प्रधान होते है । इसीलिए हरियाणा के संगीत में ताल, लय, वाद्यो की संख्या अधिक है । इसका कारण है कि हरियाणा की भूमि वीरों की भूमिक कहलाती है इसीलिऐ वीर और रौद्र रस उनके शरीर में रुधिर का कार्य करता है। प्रेम गाथाओं में भी अधिकांशतः वीर रस दिखाई देता है इसी कारण इनकी संगत के लिए स्वर प्रधान वाद्यों की अपेक्षा ताल और लय वाद्यो की प्रधानता अधिक रहती है । हरियाणवी लोक संगीत में प्रयुक्त लोकवाद्यों को दो वर्गो में विभाजित किया गया है ।

1. ताल और लय के आधार पर वाद्यों का वर्गीकरण
   - क खाल साज (अवनद्ध वाद्य)
   - ख ताल साज (घन वाद्य)
2. स्वर देने वाले वाद्यों का वर्गीकरण
   - ग. तार साज (तत् वाद्य)
   - घ. फूँक साज (सुषिर वाद्य)
   - ताल देने वाले वाद्य

(क.) खाल साज

1. ढोलक :

यह वाद्य हरियाणवी लोक–संस्कृति का सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण अवनद्व वाद्य है । इसका प्रयोग यहाँ के समाज में भजन–कीर्तन, विवाह, जन्म एंव मृत्यु आदि के कार्यक्रम में विशेष रूप से किया जाता है । इसके अतिरिक्त लोक त्योहारो एंव लोक–नाट्यो (सांग) आदि में भी इसका विशेष रूप से प्रयोग होता है, अर्थात् यह वाघ हरियाणा के लोक संगीत में काफी प्रसिद्ध है तथा यहाँ के मुख्य अवनद्ध वाघ के रूप में जाना जाता है । इसके निर्माण में आम, शीशम, नीम एंव जामुन आदि की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।

बनावट की दृष्टि से यह वाद्य अंदर से खोखला होता है । इसके दोनो सिरो पर बकरे, ऊँट आदि जानवरों की खाल मढी जाती है तथा इसे गोद में रखकर दोनो हाथो की थाप द्वारा बजाया जाता है। इसका प्रयोग लोकसंगीत में ताल देने के लिए किया जाता है ।

2. ढोल :

इस वाद्य का प्रचलन भी हरियाणा प्रदेश में काफी लम्बे समय से चला आ रहा है । यह ढोलक वाद्य का ही बड़ा रूप है । इनका वादन यहाँ शादी–विवाह, जन्म, खेल–तमाशा, पशु–मेला, जुलूस, होली राग, लोक नृत्यों एंव अन्य सामाजिक अवसरो पर किया जाता है । यह आम की लकड़ी से बनाया जाता है तथा अन्दर से खोखला होता है । इस वाद्य पर अधिकतर कहरवा एंव दादरा आदि ताल ही विभिन्न ठेकों में बजाए जाते है।

3. नगाड़ा

इस वाद्य का प्रयोग हरियाणवी संगीत की 'रागणी' सांग आदि विधाओं के प्रदर्शन में मुख्य रूप से किया जाता है । इसके अतिरिक्त हरियाणवी वाद्यवृन्द (आरकेस्ट्रा) में भी इसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका रहती है । हरियाणवी नगाड़े का आकार दो कटोरियो की भाँति होता है जिनमें से एक भाग बड़ा होता है जो ताबे का होता है तथा दूसरा छोटा भाग लोहे का बना होता है । इन दोनो कटोरो पर खाल मढी जाती है । बडे पर भैंस की तथा छोटे पर ऊंट की। वाद्य को दो छड़ियो द्वारा बजाया जाता है ।

4. डमरू :

हरियाणा के लोक संगीत में डमरू का महत्व बहुत कम रह गया है इसका प्रयोग अधिकतर मदारी एवं देहात में किसान लोग ही खाली समय में संगीत सभा आदि का आयोजन करके करते है और विशेषकर गुग्गा नामक लोकगीत में डमरू वाद्य का प्रयोग करते है । डमरू लकड़ी मिटटी के बने होते है । यह बीच में से पतला और आसपास से मोटा होता है । इसके दोनो मुख पर चमड़ा मढा जाता है । डमरू के बीच वाले भाग को हाथ से पकड़कर हिलाते है तो इसकी गांठयुक्त रस्सिया डमरू की खाल पर प्रहार करती है, जिससे ध्वनि की उत्पत्ति होती है ।

6. डफ :

हरियाणवी लोक संगीत में इस वाद्य का काफी महत्व माना गया है । इसका प्रयोग अधिकतर धमाल एंव फाग आदि नृत्यों में किया जाता है, जिसमें प्रत्येक नर्तक के हाथों में यह वाद्य होता है । यह खाल में मढा गया लकड़ी का गोल आकृति वाला वाद्य होता है, इसे हाथ की ऊँगलियों के सामूहिक आद्यात से बजाया जाता है । वैसे यह आर्यो का प्राचीन वाद्य है, क्योंकि भारत ही नही, बल्कि आर्य देश 'फारस' में भी इसका प्रचलन प्राचीनकाल से हो रहा है । लेकिन फारसी भाषा में मूर्धन्य ध्वनियाँ (यथा ट,ठ,ड इत्यादि) न होने से इसे 'दफ' भी कहा जाता है । हरियाणवी में डफ को डफली भी कहा जाता है ।

7. डेरू :

हरियाणवी लोक–संगीत का यह वाद्य देखने में डमरू की भाँति ही होता है, किन्तु अन्तर केवल इतना है कि इसे लकड़ी की बारीक छड़ी द्वारा प्रहार करके बजाया जाता है । वैसे तो डेरू एक परम्परागत लोक–वाद्य ही माना गया है । किन्तु हरियाणा प्रदेश में झाड–फूँक करने वाले ओझा तथा गुग्गा–पीर के भक्तजन गुग्गा–गायन के समय इसका प्रयोग करते है । गुग्गा–नृत्य में आठ–दस लोग सामूहिक रूप से इसे बजाते हुए देखे जा सकते है । आजकल हरियाणवी सांस्कृतिक उत्सवों आदि में इसका वादन देखा जा सकता है।

7. खजरी :

खंजरी का प्रयोग हरियाणा के लोक–संगीत में बहुत होता है । इस प्रदेश मे इस वाद्य का प्रयोग मदारी और मांड आदि मांग कर खाने वाली जातियों

द्वारा भी किया जाता है इसके अतिरिक्त यहाँ के लोक गीतो, नृत्यों एंव नाट्यो आदि के प्रदर्शन के समय भी इसका प्रयोग होता है । खंजरी गोल आकार की लकड़ी अथवा पीतल की चादर से बनी होती है । इसमें तीन–चार जगहो पर धातु के छल्ले लगाये जाते है और बाएँ हाथ की उँगलियों के प्रहार से बजाया जाता है ।

ख ताल साज

1. **खड़ताल**

खडताल एक अति प्राचीन लोक वाद्य है । यह करताल के नाम से भी जाना जाता है । प्राचीन समय से लेकर अब तक यह वाद्य मन्दिर, गुरूद्वारों में भजन, कीर्तन के साथ बजाया जाता है । यह जोगी भक्त आदि के हाथों में प्रायः देखा जाता है । हरियाणा के लोकप्रिय लोक नाटक 'सांग' में इस वाद्य का बहुत प्रयोग किया जाता है । बनावट की दृष्टि से लकड़ी के दो समान टुकडों में छोटी–छोटी दो झांझे लगाकर यह वाद्य बनाया जाता है । एक लकड़ी के टुकडे में अंगूठा डालने की जगह तथा दूसरे टुकडे में चार अंगुलियां डालने की जगह होती है । उन्हे एक हाथ में पकड़ा जाता है । दोनो टुकड़ो के आपस में टकराने से आवाज पैदा होती है ।

2. **घड़ा** :

हरियाणवी लोक वाद्यो में 'घड़ें' का प्रमुख स्थान है । हरियाणा प्रदेश में इसे घडवा भी कहा जाता है । जिसका प्रयोग यहां के लोग मुख्यतः रागनियो, बीन और बांसुरी की लहरों आदि लोक शैलियों में करते है । हरियाणवी ऑरकेस्ट्रा में भी इस वाद्य का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है ।

बनावट की दृष्टि से यह एक साधारण वाद्य होता है हरियाणा में घड़े के मुख पर रबड का टुकडा बांध कर बजाते है, कुछ कलाकार कभी–कभी बिना रबड़ के घड़े को बजाते है ।

3. **चिमटा** :

यह लोक वाद्य मन्दिरों में भजन और कीर्तन, नगर कीर्तन तथा प्रभात फेरी के लिए प्रयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त साधु संतो तथा धार्मिक उत्सवों पर चिमटे का प्रयोग किया जाता है । इसका आकार लगभग दो फुट लम्बे लोहे के साधारण चिमटे के समान होता है । इसके ऊपरी हिस्से पर लोहे का एक कड़ा लगा होता है । इस वाद्य को दोनो हाथो से पकड़कर बजाया जाता है । अधिकतर चिमटों पर खाल की भॉति छोटी–छोटी झांझे लगी होती है।

4. मंजीरा :

'मंजीरा' एक प्रचलित लोक वाद्य है जिसका प्रयोग लोक संगीत तथा भक्ति संगीत में किया जाता है । हरियाणा के लोक नृत्य रसिया में कभी–कभी झांझ के स्थान पर मंजीरे का प्रयोग किया जाता है । यह वाद्य धार्मिक स्थानों, कीर्तनो एंव देवताओं की पूजा में प्रयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर ढोलक के साथ गान करती हुई ग्रामीण महिलाएं इसका वादन करती है । मंजीरे को दोनो हाथों में पकड कर आपस में टकराने से बजाया जाता है ।

5. **घुघंरू** :

संगीत ग्रंथो में इस वाद्य को 'क्षुद्र घण्टिका' कहा गया है यह एक अति प्राचीन वाद्य है । घुघंरू दो प्रकार के होते है एक तो बड़े आकार के जो घोडे और बैल आदि के गले में डाले जाते है दूसरा छोटे आकार के घुघुंरू जिनका प्रयोग नृत्य आदि में किया जाता है । हरियाणा के लोक नृत्यों तथा लोक नाट्य सांग में जो पुरूष स्त्रियों का वेष भरते है, नृत्य करते हुए इन घुंघरूओं का प्रयोग करते है । जो घुघंरू लोक–नृत्यों में प्रयोग किए जाते है, वह एक चमडे के पटटे में पिरोए जाते है ।

(ग) **तार–साज**

इक तारा :

हरियाणा का प्रसिद्ध 'वाद्य वृन्द' नगारा वादन तथा होली राग में एक तारे का प्रयोग किया जाता है । प्राचीन काल से लेकर अब तक यह साधु संतो का वाद्य रहा है । भिक्षुक और जोगी लोग इसका प्रयोग करते है । हरियाणा प्रदेश में 'दो तारा' नाम से एक अन्य वाद्य भी प्रचलित है। इसका आकार एक तारा के समान ही होता है । केवल इसमें एक ही जगह दो तारों का प्रयोग किया जाता है । बनावट की दृष्टि से 'एक तारा' प्राचीन एकतन्त्री वीणा का ही परिवर्तित स्वरूप है जो आज भी साधु, सन्तों द्वारा भजन गायन के साथ बजाया जाता है ।

2. **सांरगी** :

सांरगी हरियाणवी लोक संगीत में प्रयोग किया जाने वाला सबसे लोकप्रिय वाद्य है । इस प्रदेश के लोक संगीत में रागनी, किस्सा राग, गूग्गा में सांरगी का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है । हरियाणा में दो प्रकार की सांरगी प्रचलन मे है ।

i. जोगिया सांरगी

ii. धानी सांरगी

हरियाणा प्रदेश में प्रयुक्त 'जोगिया सांरगी' आकार में छोटी होती तथा उसके घुडच पर तांत के तीन तार लगे रहते है तथा 'धानी सारंगी' में तूम्बा सीधी और से स्पष्ट होता है और इसमें लोहे के दो तार तथा तांत के दो तार होते है सांरगी का वादन गज की सहायता से किया जाता है ।

घ. **फूँक साज**

1. बांसुरी :

बांसुरी वाद्य को वंशी तथा मुरली के नाम से भी जाना जाता है। यह अति प्राचीन एंव प्रसिद्ध वाद्य है । इसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत दोनो में किया जाता है । हरियाणा के लोक संगीत में इस वाद्य का प्रयोग फाग, धमाल, बीन, बांसुरी नृत्य आदि में किया जाता है । बीन के लहरे के साथ इस वाद्य का अद्भुत सहयोग माना जाता है ।

2. **अलगोजा :**

अलगोजा वाद्य हरियाणा प्रदेश के चरवाहों का जातीय वाद्य है यह एक अत्यन्त प्राचीन वाद्य है यह वाद्य विशेष कर हरियाणवी लोक गायन और लोक नृत्यों के साथ संगत के रूप में प्रयुक्त किया जाता है तथा स्वतन्त्र रूप से भी इसका वादन किया जाता है । यह बांसुरी का ही एक रूप है । अलगोजा वाद्य में दो बांसुरियां एक साथ जुड़ी होती है । वादक दोनो ही बांसुरियों में एक साथ फूंक मारता है । प्रत्येक बांसुरी पर तीन–तीन अंगुलियां रखी जाती है और ध्वनि उत्पन्न की जाती है ।

3. **शहनाई :**

शहनाई वंशी जैसा ही सुषिर वर्ग का वाद्य है और प्रायः विवाह आदि मंगल अवसरों पर बजाया जाता है । यह वाद्य 18 अंगुल लम्बा होता है और इसमें स्वर वाले सात छिद्र ऊपर होते है । ध्वनि में मधुरता लाने के लिए एक छिद्र नीचे की और भी होता है । इस वाद्य का आकार धतूरे के फूल जैसा होता है । हरियाणा में शहनाई वाद्य का प्रयोग विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है । इस वाद्य का प्रयोग शास्त्रीय तथा लोक वाद्य दोनो ही रूपों में किया जाता है । हरियाणा के लोक संगीत में शहनाई वाद्य से मिलता जुलता 'क्लेरियोनेट' वाद्य का प्रयोग भी किया जाता है ।

4. **शंख** :

यह एक अति प्राचीन सुषिर वाद्य माना जाता है । हरियाणा के लोक संगीत में इसका उपयोग भक्ति– संगीत, मन्दिरों में आरती आदि के रूप में किया जाता है । इस वाद्य का प्रयोग घड़ियाल, घण्टी, ढोल, आदि वाद्यों के साथ किया जाता है । स्वतंत्र रूप से भी यह कहीं–कहीं बजाया जाता है ।

5. **बीन** :

बीन हरियाणा का परम्परागत वाद्य है । मूल रूप से यह सपेरो का वाद्य है परन्तु हरियाणा के बहुत से लोक कलाकारों ने इसमें रूचि ली है इसे अपनाया है । लोक कलाकार अपने बीन वादन कला से सुनने वालों को मन्त्र मुग्ध कर लेते है । यहां तक कि बीन और बांसुरी का इतना अधिक महत्व है कि कोई भी कार्यक्रम शुरू करने से पहले बीन–बांसुरी पर लहरे बजाये जाते है । इस वाद्य का प्रयोग मुख्य रूप से हरियाणवी लोक नृत्य, फाग, नृत्य, धमाल नृत्य, सांग आदि में किया जाता है । हरियाणा प्रदेश में प्रत्येक लोक कलाकार बीन को स्वीकार करता है । इस देश में फागुन के दिनो में तथा सावन के वर्षो भरे वातावरण में गांव के लोक कलाकार बीन के लहरे छोड़कर बड़े कर्णप्रिय वातावरण की सृष्टि करते है ।

ऊपर लिखित वाद्यों के अतिरिक्त हरियाणा मे कुछ ऐसे वाद्य भी है जो केवल इसी प्रदेश में प्रचलित हैं । जैसे अवनद्व वाद्यों मे ताशा, घन वाद्यों में झांझ आदि । हरियाणवी लोक नृत्यों में इन लोक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है । हरियाणा के इन सभी लोक वाद्यों के अतिरिक्त कुछ ऐसे वाद्य भी है । जैसे– हारमोनियम, बैजों, प्यानों आदि । ये कुछ ऐसे वाद्य है । जो मूल रूप से लोक वाद्य तो नहीं परन्तु संगीत को और अधिक प्रभावशाली एंव कर्णप्रिय बनाने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है ।

हरियाणा के लोग संगीत वाद्यों पर अध्ययन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि जनमानस लोक वाद्यो से प्राचीन काल से प्रभावित होता आया है । हरियाणा प्रदेश के लोक कलाकारों ने अनेक वाद्यों को अपनाया है । अतः कहा जा सकता है कि हरियाणवी लोकगीतो, नाट्यो में लोकवाद्यों की अहम भूमिका रही है । लोक वाद्यो के चारों वर्गो के अन्तर्गत आने वाले सभी प्रमुख प्रकारों का वादन इसके विशेषज्ञ वादकों द्वारा कुशलतापूर्वक किया जा रहा है । गाँवो में रहने वाले ये वादक प्रायः बहुत ही निर्धन है और बड़ी कठिनाई से अपना जीवनयापन कर रहे हैं । फिर भी ये दिन–रात अपनी वादन कला की साधना किए जा रहे हैं । समय बीतने के साथ–साथ ये

देवी सरस्वती के अलबेले साधक अपनी वादनकला में अपेक्षित संशोधन और सुधार करते हुए प्रदेश में वादनकला को विशेष रूप में और देवी शारदा को सामान्य रूप में अपनी अमूल्य सेवाओं से समृद्ध कर रहे हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

1. रीता धनकर, हरियाणा का लोक संगीत, प्रकाशन, राधा पब्लिकेशनस, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
2. डॉ॰लालमणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली–1973
3. पंजाब की संगीत परंपराः गीता पैतल, राधा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली ।
4. लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत दिसंबर, 2010, प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस–204101 (उ॰प्र॰)